8 जो मैं नहीं बन सका

पाठ-योजना

पाठ का नाम	**जो मैं नहीं बन सका**
कालांश संख्या	4 से 8
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
पाठ का उद्देश्य	• बाल-मन के अपरिपक्व विचारों से अवगत करवाना • व्यंग्य विधा से परिचित करवाना • सोच-समझकर निर्णय लेने की सीख देना • क्रिया-भेद और विशेषण-रचना का परिचय देकर अभ्यास करवाना • पाठ का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन सिखाना • कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण, अर्थ और प्रयोग सिखाना • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
पाठ में आने वाले विषय	सकर्मक-अकर्मक क्रिया, विशेषणों की रचना, मुहावरों का वाक्य-प्रयोग, वचन-परिवर्तन, व्यंग्य आधारित रचनाओं का पठन, विज्ञापन-लेखन, वाद-विवाद, अनौपचारिक पत्र-लेखन, पत्रिका हेतु लेख लिखना, भाषा-खेल
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, Websupport (Worksheets), आई-बुक एनिमेशन, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	परंतु/परन्तु, पेंटर/पेण्टर, फट्टा/फट्टा, विद्यार्थी/विद्यार्थी, पिद्दी/पिद्दी, घंटों/घण्टों, ज़िंदगी/ज़िन्दगी
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल—पठन, वाचन-श्रवण	• पाठ का आरंभ शीर्षक और चित्राधारित चर्चा से करवाएँ—शीर्षक से पाठ की विषयवस्तु के बारे में क्या पता चलता है? चित्र से क्या-क्या पता चल रहा है? तमाशा कौन दिखा रहा है? ब्रश से व्यक्ति क्या कर रहा है? बच्चे हँस क्यों रहे हैं? बच्चा क्या सोच रहा है? आदि। • पाठ का सार बताएँ। • पाठ का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर पाठ का वाचन करवाएँ। • बीच-बीच में पाठ आधारित छोटे-छोटे प्रश्न पूछते रहें जिससे एकाग्रता बनी रहे। • कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों को Board पर लिख लें तथा इनके अर्थ और सही उच्चारण बताएँ। • पाठ की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न 1 और व्याकरण संबोध में दिए प्रश्नों के हल पुस्तक में ही करवाएँ। प्रश्न 2 और 3 पर कक्षा में चर्चा करें और कॉपी में हल लिखवाएँ।

Scanned with OKEN Scanner

	• विषय संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत छात्रों के समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार गतिविधि का चुनाव करे और कक्षा में प्रस्तुत करे। • 'क्या होता यदि' शीर्षक के अंतर्गत दी गई स्थिति पर सामूहिक चर्चा करवाएँ और मुख्य बिंदुओं को कॉपी में नोट करने को कहें।
अंत कौशल— लेखन, वाचन	Websupport से Worksheet के प्रिंट लेकर बच्चों को वितरित करें और गृहकार्य के रूप में करके लाने को कहें। कक्षा के सभी बच्चे एक-दूसरे की Worksheet की जाँच करें अथवा शिक्षक सही उत्तर कक्षा में बुलवाएँ और छात्रों को स्वमूल्यांकन करने दें।
शिक्षण संप्राप्तियाँ	• छात्र बाल-मन के विचारों से अवगत होंगे। • व्यंग्य विधा से परिचित हो जाएँगे तथा व्यंग्य लेखन कर सकेंगे। • कोई भी निर्णय सोच-समझकर लेना सीखेंगे। • पाठ का शुद्ध वाचन कर सकेंगे। • कठिन शब्दों का उच्चारण और अर्थ जानकर बातचीत में प्रयोग कर सकेंगे। • पाठ में आए व्याकरणिक बिंदुओं का अभ्यास हो जाएगा। • पठन, विज्ञापन-लेखन, वाद-विवाद, अनौपचारिक पत्र-लेखन, पत्रिका हेतु लेखन आदि के द्वारा विभिन्न कौशलों और सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा।

पाठ का सार

'जो मैं नहीं बन सका' डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी द्वारा लिखित व्यंग्य है। बचपन में लेखक की अजीब और मज़ेदार इच्छाएँ थीं। जब वह पाँचवीं कक्षा का छात्र था तो गाँव के फट्टा टॉकीज़ पर घंटों खड़ा रहता था। वह सबसे पहले फ़िल्म के बोर्ड बनाने वाले पेंटर से प्रभावित हुआ। उसने फ़ैसला किया कि वह जीवन में पेंटर ही बनेगा, लेकिन एक दिन जब पेंटर को मैनेजर के सामने थोड़े-से रुपयों के लिए गिड़गिड़ाते देखा तो उसने पेंटर बनने का फ़ैसला त्याग दिया। लेखक को गेटकीपर का काम भी अच्छा लगा। लक्ष्मी टॉकीज़ के मैनेजर ने उसे गेटकीपर रख भी लिया, लेकिन वहाँ उसका सामना अपने पिता से हो गया, जो सरकारी अस्पताल में डॉक्टर थे। उन्होंने लेखक की पिटाई की और घर ले गए। गेटकीपरी का भूत सिर से उतरने के बाद लेखक ने विद्यालय का हेडमास्टर बनने का फ़ैसला किया। उसे लगा कि यही सबसे रुआबदार धंधा है, लेकिन एक दिन जब ज़िला शिक्षाधिकारी दौरे पर आए और उन्होंने सबके सामने हेडमास्टर को फटकार लगाई तो लेखक की हेडमास्टर बनने की इच्छा भी समाप्त हो गई। लेखक को स्कूल की घंटी बजाने वाले चपरासी का काम भी पसंद आया, लेकिन जब एक दिन चपरासी को नौकरी से निकाल दिया गया, तो उसका यह सपना भी टूट गया। लेखक के दादा जी रिटायर्ड पुलिस ऑफ़िसर थे। उनकी प्रेरणा से लेखक ने पहलवान बनने का इरादा किया और दौड़ लगाते समय दुर्घटना का शिकार हो गया। एक मेले में जादूगर का खेल देखकर उसने तय किया कि जीवन में जादूगर ही बनना है। इस प्रकार लेखक का अपरिपक्व बाल-मन तरह-तरह के काम-धंधों के प्रति आकर्षित होता रहा, लेकिन जब वह बड़ा हुआ तब उसे जीवन की असलियत समझ में आई।

अभ्यास

पढ़िए

1. **मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)**

   दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

Scanned with OKEN Scanner

2. बताइए

क. बचपन में लेखक क्या नहीं बनना चाहता था?

उ. बचपन में लेखक न डॉक्टर बनना चाहता था और न लेखक।

ख. लेखक पहली बार किससे प्रभावित हुआ?

उ. लेखक पहली बार पेंटर से प्रभावित हुआ।

ग. लेखक के मन में गेटकीपर बनने की इच्छा क्यों जागी?

उ. गेटकीपर फ़िल्म के तीनों शो मुफ़्त में देखता था, इसलिए लेखक के मन में गेटकीपर बनने की इच्छा जागी।

घ. लेखक बनियान पहनकर ही नदी में नहाने क्यों उतर जाता था?

उ. लेखक बहुत दुबला-पतला था, इसलिए वह बनियान पहनकर ही नदी में नहाने उतर जाता था।

ङ. बड़े होकर जब जीवन को पास से देखा तो लेखक पर क्या असर हुआ?

उ. बड़े होकर जब जीवन को पास से देखा तो लेखक ने कविताएँ और कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं।

3. सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)

क. आपने बड़े होकर क्या बनने का निश्चय किया है? आपको इसकी प्रेरणा कैसे मिली? तर्क देते हुए बताइए।

उ. छात्र स्वयं करें।

ख. माता-पिता द्वारा डाँट-डपट किए जाने पर आज के बच्चों के मन में कैसे विचार आएँगे? सकारण बताइए।

उ. वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है। आज बच्चों के मन में प्रतियोगिता का भाव भरा हुआ है, इसलिए ज़्यादातर बच्चे दिन-रात पढ़ाई में ही व्यस्त रहते हैं। माता-पिता को उन्हें डाँटने-डपटने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। आज के बच्चे माता-पिता की डाँट-डपट को स्वीकार नहीं कर पाते। वे स्कूल में अध्यापकों की अधिक सख्ती भी सहन नहीं कर पाते। उनके मन में यही विचार आते होंगे कि जब हम स्वयं अपने भविष्य के प्रति सचेत हैं और अनुशासन का पालन कर रहे हैं तो हमारे प्रति सख्ती करने की क्या आवश्यकता है। आज के अधिकांश माता-पिता और अध्यापक भी बच्चों के साथ मित्र के समान व्यवहार करते हैं, इसलिए पुराने ज़माने की तरह बच्चों को डाँटने-डपटने की स्थिति आने की संभावना न के बराबर रहती है।

लिखिए

1. **गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर छाँटिए और लिखिए—**

मैं उसकी किस्मत ..... ही बनूँगा।

क. लेखक किसकी किस्मत पर रश्क करता था? — i. पेंटर की ✓

ख. लेखक जीवन भर क्या करना चाहता था? — iii. बोर्ड बनाना ✓

ग. पेंटर को कितने रुपयों की ज़रूरत थी? — ii. दस ✓

घ. लेखक को पेंटर का जीवन मस्त क्यों लगा?

उ. पेंटर बोर्ड बनाता और दिन भर टॉकीज़ पर रहता, इसलिए लेखक को पेंटर का जीवन मस्त लगा।

ङ. उसका भ्रम कैसे टूटा?

उ. जब लेखक ने पेंटर को टॉकीज़ के मैनेजर के सामने दस रुपये एडवांस के लिए गिड़गिड़ाते देखा तो उसका भ्रम टूट गया।

2. **संक्षेप में उत्तर लिखिए—**

क. मैनेजर ने लेखक की कैसी दशा देख-समझकर उसे गेटकीपर रख लिया?

उ. लेखक फटेहाल-सा बनकर मैनेजर से मिला था, इसलिए मैनेजर ने उसे अनाथ समझकर गेटकीपर रख लिया था।

ख. लेखक की जादूगर बनकर क्या करने की इच्छा थी?

उ. लेखक जादूगर बनकर हेडमास्टर साहब को बकरा बनाना चाहता था?

Scanned with OKEN Scanner

ग. लेखक को सबसे रुआबदार धंधा कौन-सा लगा? क्यों?

उ. लेखक को सबसे रुआबदार धंधा हेडमास्टर बनना लगा, क्योंकि वह सोचता था कि इसमें अधिक काम नहीं है; बस बच्चों को डाँटते-डपटते रहो।

घ. लेखक को गेटकीपरी का धंधा भव्य क्यों लगा?

उ. लेखक को लगता था कि गेटकीपर शान से ज़िंदगी जीता है और फ़िल्म के तीनों शो मुफ़्त में देखता है, इसलिए उसे गेटकीपरी का धंधा भव्य लगा।

ङ. बच्चे जल्दी-जल्दी अपना इरादा बदलते रहते हैं— क्यों?

उ. बच्चे मासूम होते है। उन्हें जीवन का अधिक अनुभव नहीं होता। वे किसी भी इनसान या काम-धंधे की कमियों को जाने बिना उसकी मामूली विशेषता से प्रभावित हो जाते हैं, लेकिन उसकी असलियत जानकर तुरंत उससे दूर भी हो जाते हैं। इस प्रकार अनुभवहीन होने के कारण बच्चे जल्दी-जल्दी अपना इरादा बदलते रहते हैं।

3. विस्तार से उत्तर लिखिए—

क. लेखक की गेटकीपरी कैसे पकड़ी गई? बाद में उसकी क्या दशा हुई?

उ. लक्ष्मी टॉकीज़ के मैनेजर ने लेखक को अनाथ समझकर शाम वाले शो के लिए गेटकीपरी का काम तो दे दिया था, लेकिन दूसरे ही दिन लेखक ने जिस आदमी का पहला टिकट फाड़ा, वे उसके पिता जी थे। लेखक के पिता जी सरकारी अस्पताल के डॉक्टर थे। बेटे को गेटकीपरी करते देख वे आग-बबूला हो गए और उसे पीटते हुए घर ले गए।

ख. लेखक चपरासी क्यों बनना चाहता था? उसका सपना कैसे टूटा?

उ. लेखक चपरासी की ज़िंदगी से प्रभावित हुआ। उसे लगा कि यही एक काम है जिसमें खाली बैठने से कोई नहीं रोकता। जब चाहो घंटी बजाकर स्कूल की छुट्टी करा दो, बाकी समय खाली बैठे रहो। यही सोचकर लेखक ने चपरासी बनने का फ़ैसला किया था, लेकिन एक दिन लेखक ने देखा कि चपरासी को नौकरी से निकाल दिया गया, क्योंकि उसकी नौकरी कच्ची थी। यह सब जानकर लेखक का चपरासी बनने का सपना टूट गया।

ग. किस घटना के कारण लेखक ने पहलवान बनने का विचार छोड़ दिया?

उ. पहलवान बनने के लिए लेखक ने सबुह-सुबह दौड़ने का फ़ैसला किया। वह दो दिन तो ठीक-ठाक दौड़ लिया, लेकिन तीसरे दिन एक कुत्ता उसके पीछे दौड़ने लगा। कुत्ते से बचने की कोशिश में लेखक एक गड्ढे में गिरकर घायल हो गया। वह लँगड़ाते हुए घर पहुँचा और उसने पहलवान बनने का विचार छोड़ दिया।

घ. जादूगर के किन कारनामों ने लेखक को जादूगर बनने के लिए प्रेरित किया?

उ. जादूगर जादू की छड़ी पानी के गिलास पर घुमाकर चुरेट बोलता और पानी की चाय बन जाती। उसने चुरेट बोलकर कागज़ के नोट बनाए, लड़के को बकरा बनाया, लड़की को हवा में उड़ाया, खाली हाथ में हवा से लड्डू पैदा किया और खाली डिब्बे में से कबूतर निकाले। जादूगर के इन्हीं कारनामों ने लेखक को जादूगर बनने के लिए प्रेरित किया।

ङ. लेखक ने अपने बचपन की इच्छाओं को 'अजीब और मज़ेदार' कहा है— क्यों?

उ. बड़े होकर जब लेखक ने जीवन की असलियत को समझा, तब उसे एहसास हुआ कि उसके बचपन की इच्छाएँ अजीब थीं। लेखक ने उन्हें अजीब इसलिए कहा, क्योंकि वे बाल-मन के अपरिपक्व विचारों से उत्पन्न हुई थीं और उनका कोई आधार नहीं था। अज्ञानता के कारण अकसर मज़ेदार स्थिति उत्पन्न हो जाती है। लेखक की इच्छाएँ भी अज्ञानता से ही उपजी थीं, इसलिए वे मज़ेदार थीं।

आशय स्पष्ट कीजिए—

क. मैं पिटाई की प्रैक्टिस अपने छोटे भाइयों पर करने लगा।

उ. पंक्ति का आशय यह है कि जब लेखक ने हेडमास्टर बनने का फ़ैसला किया तो वह बीच-बीच में अपने छोटे भाइयों पर हाथ उठाकर पिटाई का अभ्यास करने लगा, क्योंकि लेखक सोचता था कि बच्चों की पिटाई करना भी हेडमास्टर का एक काम है।

ख. मैं राणा सांगा की तरह यहाँ-वहाँ से घायल हो गया।

उ. पंक्ति का आशय यह है कि कुत्ते से बचने के लिए लेखक बहुत दौड़ा और एक गड्ढे में गिर गया। उसके शरीर पर कई जगह चोट लगी। घायल अवस्था में लेखक इस प्रकार घर लौटा, मानो राणा साँगा युद्ध के किसी मैदान से घायल होकर लौटा हो।

Scanned with OKEN Scanner

9 फुटबॉल

पाठ-योजना

पाठ का नाम	फुटबॉल
कालांश संख्या	4 से 8
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
पाठ का उद्देश्य	• उपेक्षित खिलाड़ियों की ओर ध्यान आकर्षित करना • परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की सीख देना • समास का परिचय देकर अभ्यास करवाना • पाठ का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन सिखाना • कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण, अर्थ और प्रयोग सिखाना • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना • अपठित बोध का अभ्यास करवाना
पाठ में आने वाले विषय	विलोम, कारक-चिह्न, समास-विग्रह, पर्यायवाची, नुकते वाले शब्द, विशेषण, खेल के नियमों की जानकारी, साक्षात्कार हेतु प्रश्न-निर्माण, वाद-विवाद, संवाद-लेखन, पत्र-लेखन, अपठित बोध
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, Websupport (Worksheets), आई-बुक एनिमेशन, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	हिंदुस्तान/हिन्दुस्तान, बंगाल/बङ्गाल, कलकत्ते/कलकत्ते
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल—पठन, वाचन-श्रवण	• पाठ का आरंभ शीर्षक और चित्राधारित चर्चा से करवाएँ—शीर्षक से पाठ की विषयवस्तु के बारे में क्या पता चलता है? चित्र में क्या दिखाया गया है? चित्र और पाठ के शीर्षक का क्या संबंध है? आपको कौन-सा खेल पसंद है और क्यों? शिक्षा और खेल का क्या संबंध हो सकता है? आदि। • पाठ का सार बताएँ। • पाठ का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर पाठ का वाचन करवाएँ। • बीच-बीच में पाठ आधारित छोटे-छोटे प्रश्न पूछते रहें जिससे एकाग्रता बनी रहे। • कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों को Board पर लिख लें तथा इनके अर्थ और सही उच्चारण बताएँ। • पाठ की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न 1 और व्याकरण संबोध में दिए प्रश्नों के हल पुस्तक में ही करवाएँ। प्रश्न 2 और 3 पर कक्षा में चर्चा करें और कॉपी में हल लिखवाएँ।

Scanned with OKEN Scanner

अभ्यास

पढ़िए

1. **मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)**

दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. **बताइए**

क. बच्चे जन्मदिन पर क्या उपहार लेना चाहते थे?

उ. बच्चे जन्मदिन पर बैट और बॉल लेना चाहते थे।

ख. खेल के सामान वाली दुकान कहाँ थी?

उ. खेल के सामान वाली दुकान बडशाह चौक से माईसोमा बाज़ार में घुसते ही दाहिने हाथ की दूसरी गली में थी।

ग. लेखक को अमीन की दुकान पहचानने में वक्त क्यों लगा?

उ. लेखक को दुकान पहचानने में इसलिए समय लगा क्योंकि अमीन की दुकान में बाहर और भीतर से कोई विशेष साज-सज्जा नहीं की गई थी। वह एक सामान्य-सी दुकान थी।

घ. अमीन का बेटा क्या करता था?

उ. अमीन का बेटा शौकत कलकत्ते के स्पोर्टिंग क्लब की तरफ़ से फुटबॉल खेलता था।

ङ अमीन को अपने बेटे पर गर्व क्यों था?

उ. अमीन को अपने बेटे पर गर्व था क्योंकि उसका बेटा फुटबॉल का अच्छा खिलाड़ी था।

3. **सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)**

क. मनुष्य को हालात के आगे घुटने क्यों टेकने पड़ते हैं? उदाहरण देते हुए अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ. छात्र जीवन या युवावस्था में हम जो सपने देखते हैं उन्हें साकार कर पाना इतना सरल नहीं होता है। युवावस्था में मन कल्पना की ऊँची उड़ान भरता है। उसके सामने अनंत आकाश भी जैसे छोटा पड़ जाता है। मन का पंछी जब यथार्थ की कठोर ज़मीन से टकराकर टूट जाता है, तब वह अपने अस्तित्व की नई लड़ाई शुरू कर देता है। इस लड़ाई में वह कभी समझौता करता है और कभी संघर्ष। यहाँ तक कि हालात के आगे घुटने टेकने के लिए भी विवश हो जाता है; जैसे पाठ में अमीन के साथ हुआ और पाठ के लेखक का फुटबॉलर बनने का सपना भी पूरा नहीं हो पाया।

ख. खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के लिए क्या करना चाहिए? कुछ सुझाव दीजिए।

उ. खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के लिए उपाय इस प्रकार हैं—

- खिलाड़ियों को खेल के प्रदर्शन के अवसर उपलब्ध करवाने होंगे।
- खिलाड़ियों को विश्वस्तर के खेल के उपकरण देने होंगे।
- विस्वस्तरीय प्रदर्शन के लिए विश्वस्तर के खेल प्रशिक्षकों की नियुक्ति करनी होगी।
- विश्वस्तर के खेल के मैदानों का विकास करना होगा।
- खेल-भावना के विस्तार के लिए खेलों को जीवन और शिक्षा का मुख्य अंग बनाना होगा।
- खिलाड़ियों और खेल को बढ़ावा देने के लिए नगद धन राशि की व्यवस्था करनी होगी।
- खिलाड़ियों को खेल के क्षेत्र में या अन्य क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर भी उपलब्ध करवाने होंगे।
- बिना किसी भेदभाव के खेल और खिलाड़ियों का उनके अच्छे प्रदर्शन पर सम्मान करना होगा।
- खेल-विद्यालयों का निर्माण करना होगा।
- रिटायर हो चुके खिलाड़ियों के अनुभवों का उपयोग करना होगा जिससे वे उपेक्षित महसूस न करें।

Scanned with OKEN Scanner

लिखिए

1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर छाँटिए और लिखिए—

अब अमीन.....गुज़ारा भर हो जाता है!

क. अमीन क्या सामान पैक कर रहा था?

ख. यह वार्तालाप किनके बीच हो रहा है?

ग. अमीन क्लब में कितने साल खेला?

i. लेखक और अमीन ✓

ii. दो-तीन साल ✓

iii. क्रिकेट के बैट-बॉल आदि ✓

घ. नए लड़कों के आने का पुराने खिलाड़ियों पर क्या असर हुआ?

उ. नए लड़कों के आने से पुराने खिलाड़ियों के लिए खेल के अवसर कम हो गए।

ङ. वर्तमान में अमीन की क्या स्थिति थी?

उ. वर्तमान में अमीन बुज़ुर्गों की पुरानी दुकान पर खेल का सामान बेचकर अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहा था।

2. संक्षेप में उत्तर लिखिए—

क. स्कूल के दिनों में लेखक कौन-सी टीम के लिए क्या खेलता था?

उ. स्कूल के दिनों में लेखक जम्मू-कश्मीर टीम के लिए फुटबॉल खेलता था।

ख. अमीन के गोल करने पर क्या होता था?

उ. अमीन के गोल करने पर सब लोग ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते थे, फिर लगातार शोर होता रहता था और तालियाँ बजती रहती थीं। टीम के बाकी खिलाड़ी अमीन को कभी गले लगाते थे और कभी कंधे पर उठाते थे।

ग. 'अब तो फुटबॉल को किक लगाए भी पता नहीं कितने बरस बीत गए।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उ. ऐसा लेखक ने इसलिए कहा है क्योंकि लेखक अब अपने परिवार और नौकरी में व्यस्त रहता है। उसे फुटबॉल खेलने के लिए समय ही नहीं मिलता।

घ. अमीन क्या-क्या बेचता था और क्यों?

उ. अमीन खेलों के सामान के साथ टॉफ़ियाँ, चॉकलेट, कॉपी, पेंसिल भी बेचता था क्योंकि केवल खेलों के सामान की बिक्री से उसके परिवार का गुज़ारा नहीं हो सकता था।

ङ. लेखक ने फुटबॉलर अमीन और दुकानदार अमीन में क्या अंतर महसूस किया?

उ. फुटबॉलर अमीन के जीवन में अपने खेल के प्रति एक जुनून था। दुकानदार अमीन के जीवन में परिवार का पालन-पोषण करने की ज़िम्मेदारी है।

3. विस्तार से उत्तर लिखिए—

क. अमीन कौन था? जब वह गेंद के पीछे भागता था तो क्या होता था?

उ. अमीन फुटबॉल का एक अच्छा खिलाड़ी था। जब वह गेंद के पीछे भागता था, तो सारे दर्शकों में शोर की एक लहर उठ जाती थी। सभी में एक जोश, एक उम्मीद उभरती थी कि अब ज़रूर कुछ न कुछ होगा।

ख. दुकान पर बैठे अमीन और उसकी दुकान का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उ. दुकान पर बैठे अमीन ने खाकी रंग का पुराना-सा लेकिन साफ़ खानसूट पहना हुआ था। उसके पाँव में नायलॉन की चप्पलें थीं। उसका आधा सिर गंजा था। अमीन की दुकान के बाहर मटमैले-से बोर्ड पर लिखा था— अमीन स्पोर्ट्स स्टोर। दुकान के बाहर दो फुसफुसे-पिचके फुटबॉल और एक बैट लटके हुए थे। पिछले हिस्से के एक कोने में कई बैट दीवार के सहारे टिके हुए थे।

ग. चलते समय अमीन ने लेखक को क्या दिया? क्यों?

उ. चलते समय अमीन ने लेखक को एक फुटबॉल दिया। उसका मानना था कि लेखक के बच्चे कभी-कभी इससे भी खेल लिया करेंगे। वह सोचता था कि शायद फुटबॉल खेलने से बच्चों में इस खेल के प्रति रुचि जागेगी।

Scanned with OKEN Scanner

घ. अमीन ने ऐसा क्यों कहा, ''आजकल फुटबॉल कोई छोटा खेल नहीं है साहेब?''

उ. 'आजकल फुटबॉल कोई छोटा खेल नहीं है साहेब।'— ऐसा अमीन ने इसलिए कहा कि यदि कोई फुटबॉल का अच्छा खिलाड़ी हो तो इसमें पैसा, इज्ज़त, शोहरत और नाम सब कुछ है। अमीन अपने जीवन में इस खेल के द्वारा ही प्रसिद्धि पा चुका था। अब उसका बेटा भी फुटबॉल में रुचि रखता है और अच्छा खेल रहा है।

आशय स्पष्ट कीजिए—

क. वक्त भी आदमी को इतना नहीं बदल सकता।

उ. इस पंक्ति का आशय यह है कि लेखक अपने छात्र जीवन के प्रसिद्ध खिलाड़ी और उसकी दुकान को पहचान न सका था। छात्र जीवन के अमीन और दुकानदार अमीन में बहुत फ़र्क था। वक्त और परिस्थितियाँ इनसान की सोच, जीवन-शैली आदि को बहुत बदल देती हैं।

ख. खेल गया, नौकरी गई, पैसे गए, शोहरत भी चली गई।

उ. इस पंक्ति का आशय यह है कि जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, नए खिलाड़ी नए दमखम के साथ आते रहते हैं और पुराने खिलाड़ियों को स्थान खाली करना पड़ता है। यही प्रकृति का नियम भी है। इसी में नवाचार का भाव निहित है।

समझिए व्याकरण संबोध

1. विलोम लिखिए—

पुराना	× ···नया···	बचपन	× ···बुढ़ापा···	पिछला	× ···अगला···
हँसना	× ···रोना···	दोस्त	× ···दुश्मन···	सफ़ेद	× ···काला···
आधा	× ···पूरा···	भीतर	× ···बाहर···	सच	× ···झूठ···

2. सही कारक-चिह्न भरकर वाक्य पूरे कीजिए। कारक का नाम भी लिखिए—

क. एक कोने ···में··· कई बैट दीवार के सहारे टिके हुए थे। ···अधिकरण कारक···

ख. मैंने दुकान ···की··· सीढ़ियों पर कदम बढ़ाए। ···संबंध कारक···

ग. तुम्हें अपने जन्मदिन ···पर··· क्या चाहिए? ···अधिकरण कारक···

घ. ···अरे!··· यह क्या कर रहे हैं आप? आप तो मुझसे बड़े हैं। ···संबोधन कारक···

ङ. बच्चों ···ने··· जैसे-तैसे अपना सामान उठा लिया। ···कर्ता कारक···

च. मैंने अपना दायाँ हाथ सामान ···से··· मुक्त करके अमीन की तरफ़ बढ़ाया। ···अपादान कारक···

3. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए—

जन्मदिन	— ···जन्म का दिन—संबंध तत्पुरुष···	भलामानस	— ···भला है जो मानस—कर्मधारय···
दिलोदिमाग	— ···दिल और दिमाग—द्वंद्व समास···	घरखर्च	— ···घर के लिए खर्च—संप्रदान तत्पुरुष···
खेल-सामग्री	— ···खेल की सामग्री—संबंध तत्पुरुष···	चौराहा	— ···चार राहों का समूह—द्विगु समास···
आजीवन	— ···जीवन भर—अव्ययीभाव समास···	घुड़सवार	— ···घोड़े पर सवार—अधिकरण तत्पुरुष···

4. निम्नलिखित अंग्रेज़ी/उर्दू शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए—

बैट	— ···बल्ला···	स्पोर्ट	— ···खेल···	खिदमत	— ···सेवा···
नज़र	— ···दृष्टि···	यकीन	— ···विश्वास···	साइज़	— ···आकार···
शोहरत	— ···प्रसिद्धि···	लाइन	— ···पंक्ति···	टॉप	— ···उच्च···

5. नुकता लगाकर शब्द दुबारा लिखिए—

बाजार	— ···बाज़ार···	मरजी	— ···मरज़ी···	इज्जत	— ···इज़्ज़त···
सिर्फ	— ···सिर्फ़···	गुजारा	— ···गुज़ारा···	जरा	— ···ज़रा···
लेफ्ट	— ···लेफ़्ट···	बुजुर्ग	— ···बुज़ुर्ग···	टॉफियाँ	— ···टॉफ़ियाँ···

Scanned with OKEN Scanner